National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.multidisciplinaryjournal.org
ISSN: 2455-9040
Received: 01-11-2021, Accepted: 15-11-2021, Published: 30-11-2021
Volume 6, Issue 4, 2021, Page No. 29-32

समर्थ नारी की संघर्ष गाथाः अनारो

सुनीता मिश्रा
असोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, बी. एम. रुइया गर्ल्स कॉलेज, गामदेवी, मुंबई, महाराष्ट्र, भारत

सारांश
कहने को आज नारी अधिकारों से सम्पन्न है। उसे संवैधानिक, सामाजिक अधिकार मिल चुके हैं। नारी को मिलनेवाले इन अधिकारों के लिए इतिहास गवाह है कि भारत में नारी को जो अधिकार मिले हैं वह ना तो किसी विद्रोह का परिणाम है और ना ही भावुकता या स्त्री के प्रति किसी प्रकार की संवेदना का परिणाम हैं। यह अधिकार भारतीय नारी ने अपनी योग्यता एवं कार्य कुशलता से प्राप्त किये हैं। किंतु क्या वास्तव में इन अधिकारों से नारी को गर्व से जीने का सम्मान मिला है?क्या उसपर अत्याचार नहीं हो रहा है? यह सबसे बड़ा प्रश्न आज भी बना हुआ है। फलस्वरूप समकालीन हिंदी साहित्य में नारी चेतना का स्वर प्रखर हुआ। साहित्य के क्षेत्र में महिला कथाकारों ने नारी जीवन से जुड़े अनेक घटको, बिंदुओं को केंद्र में रखकर अपने कथा साहित्य का सृजन किया है। जिन महिला उपन्यासकारो ने नारी जीवन के विभिन्न पहलुओं को अपने उपन्यासों में उजागर किया है उनमें मंजुल भगत का नाम शीर्षस्थ है और उनका उपन्यास "अनारो" एक विशिष्ट पहचान रखता है ।
महानगरी झुग्गी–झोपड़ी में रहकर, कोठियों में खटने वाली अनारो की चीख किसी एक अनारो की नहीं बल्कि उसमें उस प्रत्येक स्त्री की त्रासदी छुपी है जो आर्थिक–अभाव, सामाजिक रूढ़ियों और पुरुष अत्याचार के पहाड़ ढोते हुए भी सम्मान सहित जीने का संघर्ष करती है, फिर चाहे वो निम्नवर्ग की अशिक्षित अनारो हो या फिर मध्यम वर्ग की शिक्षित टीचर मालकिन हो अथवा उच्चवर्ग की सम्पन्न मोटी मालकिन, सभी पुरुष प्रधान समाज के अत्याचार से प्रताड़ित हैं, किंतु सम्मान से जीवन–यापन करने का अथक प्रयास कर रही हैं ।
अनारो के गैर जिम्मेदार, शराबी, अय्यासी पति नंदलाल ने उसे सौत, गरीबी और बच्चे यह सब कुछ दिया है पर उसे सम्मान व प्रेमभरा साथ नहीं दिया। फिर भी वह उसकी ब्याहता है और पत्नी होने के नाते उस पर गुमान करती है और चाहती है कि हर कारज–त्यौहार में उसका पति बस उसके बराबर खड़ा रहे। पति की लापरवाही पर नाराज न होते हुये जब भी वह लौटकर आता है, तब अनारो आदर्श पत्नी बनकर उसका स्वागत करती है। नंदलाल शराब पीकर अनारों की पिटाई करता है। किसी काम में हाथ नहीं बटाता, यहाँ तक कि कर्ज व्यापार में भी वह पत्नी का साथ नहीं देता, तब भी अनारों बस इतना चाहती है कि पति की दृष्टि में उसका मान बना रहें।
दरअसल अनारो दुख और साहस की ऐसी मूरत है जिसमें उसके जैसी स्त्री की सारी भयावह सच्चाई पूंजीभूत हो उठी है। वह एक साधारण–सी लगनेवाली स्त्री की जिजीविषा तथा एक औरत के संघर्ष की कहानी है । ऐसी स्त्री जो स्वाभिमान से जीना चाहती है भले ही उसे जीवन में कितनी ही चुनौतियों का सामना क्यों ना करना पड़े। वह झुकना नहीं जानती पुत्री के विवाह का खर्च अनारो अकेली संभाल लेती है, काफी कर्जा लेती है और वह कर्ज चुकाते–चुकाते एकदम टूट जाती है, बीमार हो जाती है, तब भी वह अपने सारे रिश्तेदारों तथा मुहल्ले के लोगों को बुलाकर दावत देती है। कर्ज के कारण वह जिन्दगी भर पिसती रहती है।पर अपनी बेटी की शादी किसी विवाह संस्था के द्वारा करना अनारो को बिल्कुल स्वीकार नहीं है। उसका अपनी श्रमशक्ति पर विश्वास है। वह कहती है रू–"गंजी अनारो की बेटी कोई अनाथ नहीं है, कोई कानी लुली नही है, चौबारे की ईट नहीं, तो नाले का पत्थर भी नही है, अनारो की बेटी है।" [1] (अनारो) उसका मानना है कि अपनी बिरादरी में उसका नाम न खराब हो,वह बिरादरी में झुकना नहीं चाहती है। वह चाहती है कि समाज में उसका मान–सम्मान बना रहे।
संक्षेप में इस उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने निम्न वर्ग की भयावह सच्चाईयों को उघाड़ने का प्रयास किया है। निम्नवर्ग की नारी का यह संघर्षपूर्ण जीवन मात्र अनारो का ही नहीं बल्कि इसमें हर उस नारी की त्रासदी छुपी है जो समाज में सम्मानपूर्ण जीने का संघर्ष करती है। यह अनारो जैसी कई स्त्रियों की कहानी है जिनके लिए सामान्य जीवन जीना भी किसी जंग लड़ने से कम नहीं । सामाजिक रूढ़ियों से ग्रस्त होने के कारण ये नारियाँ बिरादरी के रीति–रिवाज संभालते–संभालते कर्ज में डूब जाती है। ऐसे त्रस्त जीवन से वह भले ही बाहर से कठोर दिखाई दे, किन्तु ह्रदय से वे उतनी ही कोमल तथा संवेदनशील है। पति द्वारा दुर्व्यवहार, सामाजिक, आर्थिक शोषण, संतान की भूख तथा निजी जरूरतों, आवश्यकताओं की पूर्ति किसी तरह कर भयानक तनाव का सामना ये नारियाँ करती है।
प्रस्तुत उपन्यास का नारी पात्र अनारो भारतीय समाज की नारी जाति की दयनीय स्थिति व समस्या का परिचय देती है तथा उसपर हो रहे अन्यायों का प्रतिबिंब है । साथ ही इस उपन्यास में दिल्ली जैसे महानगर में झुग्गी झोपड़ी में रहनेवालों के जीवन का चित्रण भी किया है।

मूल शब्दः अनारो का संघर्ष, इमानदार,कर्मठ, साहसी, आत्मनिर्भर, स्वाभिमानी, लाचार किंतु दृढ़ संकल्प मां, पति द्वारा दुर्व्यवहार, सामाजिक, आर्थिक शोषण,अन्याय विरोधी अनारो, समाज में नारी की स्थिति, महानगरीय झुग्गियों में रहनेवालों का जीवन।

मंजुल भगत महिला लेखन जगत में एक चिर–परिचित नाम है । वे स्वयं नारी हैं इसलिए स्त्री जीवन का कोना– कोना झांकने में और उनकी समस्याओं को अत्यंत करीब से देखने, समझने में वे समर्थ हैं। उन्होंने बदलते संदर्भ में नारी की बदली हुई मानसिकता एवं समस्याओं को केंद्र में रखकर अपने औपन्यासिक संसार का सृजन किया है। इनके नारी पात्र वर्ग विशेष का प्रतिनिधित्व करते हैं।

निम्नतम वर्ग से लेकर उच्चतम वर्ग के दुख एवं संवेदना से तादात्म्य कराने में मंजुल भगत सिद्धहस्त हैं। उनके द्वारा रचित "अनारो" उपन्यास इसका प्रमाण है ।
'अनारो' एक ऐसा नाम है जो एक तरफ महानगरों में रहने वाले उस अशिक्षित वर्ग से जुड़ा है जिनका जीवन झुग्गी– झोपड़ियों में सांस लेता है, तो दूसरी ओर यह आधुनिकता की ओर बढ़ती समर्थ, सशक्त, आत्मनिर्भर नारी के उस रूप को उजागर करता है

जो समाज में अपने स्वतंत्र अस्तित्व को कायम करने के लिए निरंतर संघर्षशील है। परिवर्तित समाज में नारी के सामर्थ को चित्रित किया करता है। अनारो एक संघर्षशील नारी के संघर्ष की गाथा है। उसका संघर्ष पुरुष–प्रधान सामाजिक जीवन के विरुद्ध है । अनारो यह सिद्ध कर देना चाहती है कि पुरुष रूपी बैसाखी के बिना भी स्त्री समाज में सांस ले सकती है। स्त्री यदि सृष्टि की रचना करने की शक्ति रखती है, तो उसके रूप को बदलने का सामर्थ भी रखती है। अपनी मेहनत और शक्ति के बलबूते पर नारी वह सब कुछ हासिल कर सकती है जो वह अपने जीवन में चाहती है। स्त्री में यदि सहनशक्ति है,तो अन्याय के विरोध का साहस भी है। इसके बावजूद उसके हृदय में पति के प्रति प्रेम की धड़कन भी है जो मान–मनुहार की लालसा रखती है,कैसा भी पति हो उसके साथ प्रेम का एक पल बिताना चाहती है। ष्उसका जी चाहता, जिस ढब से उसका आदमी उससे बैठकर हँसे – बोले, उसमें न गाली–गलौज हो, न सौत। न रुपए– पैसे की हाय–हाय हो, न ठर्रे की गंध । बस, दुनिया – जहान की ऐसी बातें हों, जिनमें न कुढ़न हो न जलन।" [1]

अपने जीवन साथी से उम्मीद की डोर पकड़े आशा भरा स्वप्न देखती है;–

"एक सहारा.. कोई थामनेवाला.. दो बोल प्यार के ...एक धूल भरी राह पे...थकी हारी अनारो छइयाँ तले बैठकर, पेड़ से टेक लगा रही है...

कैसा मीठा हो गया है? चाहिए...अनारो को भी प्यार चाहिए.. छाँव चाहिए...नन्दलाल, तू मीठा बना रहे..अपना बना रहे तो जी जाएगी अनारो....झले जायेगी जिनागानों को... भूख प्यास को पी जाएगी... बीमारी–हारी को भी जीत लेगी....अब तुझसे लड़ने का दम मुझमे नहीं है रेश्" (पृष्ठ 76) 2

इन सभी विशेषताओं से भरी है "अनारो" उपन्यास की नायिका अनारो।

अनारो दिल्ली के ग्रेटर कैलाश इलाके के दस संपन्न घरों में बर्तन मांजने व झाड़ू लगाने का काम करती है। दस घरों में बटी–बिखरी अनारो जी–तोड़ मेहनत करके अपना एवं अपने परिवार का भरण –पोषण करती है, क्योंकि उसका पति नंदलाल गैर जिम्मेदार, बिलासी एवं शराबी है। उसके लिए स्त्री मात्र एक उपभोग की वस्तु है, तभी तो पत्नी अनारो के मायके चले जाने पर वह छबीली नाम की स्त्री से नाजायज संबंध रखता है और उसे अपने घर ले आता है। अनारो जब मायके से लौटती है तो उस छबीली को अपने घर में मालकिन बना देखती है तब उसके अंदर की स्वाभिमानी पत्नी,व गृहस्वामिनी चीत्कार उठती है और वह भूखी शेरनी की तरह छबीली पर टूट पड़ती है। अपने विलासी पति को भी फटकारने से नहीं चूकती । अन्याय का विरोध करनेवाली अनारो का यह आक्रामक रूप देखकर नंदलाल भाग खड़ा होता है, उसके बाद अनारो अकेले ही अपनी गृहस्थी को संभालती है,सँवारती है,पारिवारिक व सामाजिक जिम्मेदारियों व रिश्तों को निभाती है। उसने कभी पीछे मुड़कर नंदलाल की उंगली पकड़ने का प्रयास नहीं किया, क्योंकि वह जानती थी कि यह मात्र एक स्वप्न ही है। नंदलाल जैसा पुरुष,केवल पुरुष होने के अहम से एक स्त्री पर अत्याचार तो कर सकता है पर पति होने की जिम्मेदारी कभी नहीं निभा सकता है। इसीलिए अनारो अकेले ही हर चुनौती का सामना करती है। अनपढ़ है, गरीब है, लाचार है पर दीन–हीन कमजोर नारी नहीं है। उसे अन्याय के खिलाफ आवाज उठाना आता है। ष्कहीं कुछ थोड़ा सा आत्मसम्मान भी बचा पड़ा था, जो अपमान की चोट लगते ही, पत्थर की रगड़ खाकर तेज हुए चाकू की मानिंद उसकी जुबान को और भी पैनी और बेधक बना देता।" [3]

जब उसकी मालकिनें देर से आने पर शिकायत करती हैं और उसे दस घरों का काम करने से मना करती हैं तो वह घायल नागिन की तरह फुफकार उठती है। उसकी इस फुफकार में जहाँ एक ओर उसका क्रोध झलकता है वहीं दूसरी ओर उसकी बेबसी भी दिखाई देती है। वह कहती है दृश्मरे मेरे काम को नज़र लगाते हैं। कभी कहेंगी, दस–दस घर तो पकड़ रखे हैं। लेट नहीं आएगी तो और क्या होगा! छोड़ क्यों नहीं देती एक आध काम? अजी वाह! क्यों छोड़ दूँ दो–एक काम? अपने हाड़–गोड़ तोड़कर कमाती हूँ, तुम्हारी छातियों पे साँप काहे लोटता है?श और वो तो गंजी का बाप अगर भगोड़ा न होता तो काहे को अनारो को इतना खटना पड़ता! काम न करे तो क्या बच्चों को खाने गुरुद्वारे भेज दे? [4]

अपनी झोपड़ी में वह है अपनी बेटी गंजी उर्फ शांति और बेटे छोटू को जन्म देती है। इन दोनों के जन्म के समय भी नंदलाल भाग खड़ा होता है, क्योंकि पिता के कर्तव्य का भार वह नहीं उठाना चाहता है, लेकिन अनारो ने इसकी भी परवाह नहीं की, अकेले ही माता– पिता दोनों के स्नेह की वर्षा अपने बच्चों पर करती रही। अपनी ममता की छत्रछाया में ही उसने बच्चों को संस्कार दिए, गरीबी से लड़ने का साहस दिया, इतना ही नहीं उन्हें शिक्षा भी दी। वह जिंदा थी तो केवल अपने दोनों बच्चों के लिए। खून–पसीना एक करती थी तो अपने बच्चों के जीवन को संवारने के लिए,क्योंकि वह ममतामयी मां थी,जो हर तरह से अपने बच्चों को सुख देना चाहती थी। किंतु गरीबी की मार से कभी–कभी उसकी ममता रो उठती थी।

"जीना इसे नहीं कहते हैं, इतना उसे भी पता है। जीना वही है, जो ढेर सारे घरों में होता है,जहाँ वह बरतन घिसने,कपड़े धोने, या फर्श बुहारने जाती है।" (पृष्ठ 23) [5]

जब जिन घरों में वह काम करती थी वहां से बची–खुची लाई हुई चीजों से बहला–फुसलाकर बच्चों का पेट भरने का प्रयास करती तब उसका मातृत्व अपनी आर्थिक बेबसी पर कराह उठता, ष्सचमुच यह एक समझौता ही था अनारो का अपनी तकदीर और तदबीर से,नहीं तो क्या उसका मन नहीं करता अपने बच्चों को केसरिया खीर और दूधिया हलवा खिलाने का? क्या उसे यह सब बनाना नहीं आता?" [6] इन सारे प्रश्नों के सैलाब को झेलती, शारीरिक व मानसिक रूप से थकी मां अनारो कभी–कभी खीझकर बच्चों पर झुंझला भी उठती थी। लेकिन उसी बेबस मां ने अपने बच्चों को दृढ़ संकल्प की शक्ति से पाल–पोसकर बड़ा भी किया। अपनी जी–तोड़ मेहनत से छोटू के हाथ में पाटी थमा, म्युनिसिपैलिटी के स्कूल में भर्ती करवाकर उसके उज्जवल भविष्य के सपने भी देखे। ष्अनारो ने जो सोचा था, वह कर भी दिया । दोनों बच्चों के हाथों में कॉपी पेंसिल थमाकर, उन्हें भेजने लगी । घर में ताला झुलाकर, चाबी पड़ोसन को थमा आती। बच्चे आकर, घर खोल लेते । सवेरे उनकी तख्ती लीपते–लीपते अनारो का मन दूना हो जाता।"[7] बेटी गंजी के साथ जरा–सी छेड़छाड़ करने पर दुकानदार के लड़के को खरी–खोटी भी सुना आयी,और उसके ब्याह के लिए कमर कस ली। उसने अपने बलबूते पर बेटी के लिए केवल अच्छा वर ही नहीं तलाशा बल्कि उसकी धूमधाम से शादी भी की और उसका भविष्य संवार दिया।

अनारो केवल एक समर्थ मां ही नहीं है वह आत्मनिर्भर, स्वाभिमानी नारी भी है,जो अपने बलबूते पर अपने जीवन की छत को मजबूत कर सकती है। उसे पति नाम के सहारे की कोई आवश्यकता नहीं। जब चौदह वर्ष की नादान अनारो ब्याह कर बरेली से अपने ससुराल दिल्ली आई थी तो उस मासूम को सहारा देने वाला ममतामयी सास का न आंचल था और ना ही प्रेमी ननंद का सहारा। पड़ोसी स्त्रियों ने अपनी तरह से उस नयी–नवेली दुल्हन को जीवन की शिक्षा दे दी और नादान अनारो अब नादान न रह गई ।—

"वह झुग्गी थी सुनहरे पुल पर। वहां तो कितनी ही स्वयम्भू सासें और मुँह बोली ननदें निकल आईं, जिन्होंने चौदह वर्ष की अनारो को सब कुछ सिखा दिया।" [8]

अब अकेले ही उसे ऐसे मर्द के घर को संभालना था जिसके पैरों में मर्यादा की बेड़ियां नहीं थी। जिसके लिए जिंदगी विलासिता का नाम था और पत्नी घर में सजाने वाला मात्र एक खिलौना। पति के जर्जर व्यक्तित्व की तरह सरकंडों से बनी उस झुग्गी की, उसके छत की हालत भी जर्जर ही थी, जिस पर यदि एक पिल्ला भी कूदता तो वह गिर जाती। ऐसे टूटे–फूटे घर, और ऐसे लापरवाह पति के बीच सिमटी मासूम अनारो ने तब अपने सपनों की डोर अपने मजबूत हाथों में पकड़ ली जब सुनहरे पुल पर बनी उसकी कमजोर झुग्गी भी न रही,वह भी ऐसी स्थिति में जब वह पहली बार मातृत्व का गौरव प्राप्त करने जा रही थी, किंतु उसकी उंगली पकड़ने वाला कोई भी ना था। बीमारी में भी उसे सहारा देनेवाला अपना कोई नहीं था ।

सुनहरे पुल से ट्रक पर लदी अनारो मदनगीर के खुले मैदान में खड़ी होकर एक नए जीवन की ओर कदम बढ़ाती है। यहीं से एक ऐसी अनारो जन्म लेती है जो घर की चारदीवारी में रहकर पति के शोषण का शिकार नहीं बनना चाहती, और ना ही उन अंधेरों में घुट–घुटकर जीना चाहती है। उसने दृढ़ता से एक ऐसी झुग्गी बनाई जिसकी छत बहुत मजबूत थी। उसे अब कोई भय नहीं था, और ना ही उसने कभी पीछे मुड़कर देखा, ना ही किसी पति रूपी लाठी का सहारा लिया। "नींव डालने के पश्चात अब तक वह अकेले ही उस घर को मजबूत बनाते आयी है। कभी पलटकर नन्दलाल की ओर न देखा ।"[9] अब काम ही अनारो का सब कुछ था। मालकिनों का सहारा ही उसकी जीवन शक्ति थी। उसने अपनी मेहनत से अपनी मालकिनों का दिल भी जीत लिया था।। तभी तो बंगालन मालकिन जाते–जाते ढेर सारा प्यार सौगात के रूप में अनारो को देती है जिससे अनारो भावुक हो जाती है ।–

"देखा ? देख लिया तूने ? रे गंजी के बाप, एक तू मेरा न हुआ, तो क्या जहान भी मेरा नहीं ? अनारो को दुलारने वाले भी हैं, परमात्मा इनकी उमर दुगुनी करे ! इन्हें राज कराए ।" [10]

वह आर्थिक थपेड़ों से बिखरते अपने परिवार को पसीने की बूंदों से सींचकर जोड़ने का निरंतर प्रयास करती रही और उसमें सफल भी रही। उसने अपने परिश्रम से अपने छोटे से घर को खुशियों से भर दिया। रेडियो, घड़ी आदि जरूरत की चीजों से केवल घर को सजाया ही नहीं बल्कि टीचर मालकिन के सहयोग से डाकखाने में बचत के पैसे भी जमा करने लगी। वह पुरुष प्रधान समाज की परंपराओं से टकराती हुई बेटी के लिए कमासुत वर तलाशा और उसका ब्याह किया। इस प्रकार अनारो एक ओर यदि आर्थिक थपेड़ों की बेबसी से, अपने परिवार को गरीबी से समझौता करके साहस पूर्वक जीना सिखाती है, तो दूसरी ओर आत्म– निर्भर, स्वाभिमानी, सशक्त, आधुनिक नारी की तरह परिवार की हर जरूरतों को अपनी मेहनत के बलबूते पर पूरा भी करती है। अनारो भले ही अनपढ़ थी, किंतु उसके हौसले बुलंद थे जिसके सहारे उसने जीवन में इतनी ऊँची उड़ान भरी कि उसके घमंडी, नकारे, शराबी पति को भी अनारो के लिए "भाई बरोबर" कहना पड़ा किंतु इसी आत्मनिर्भर, निडर, साहसी नारी को सामाजिक परंपराओं व मर्यादाओं के कारण पुरुष प्रधान समाज के शोषण को भी कभी– कभी विवशता–वश मूक होकर सहना पड़ता है। वह चाह कर भी इन बेडियो को नहीं तोड़ पाती है। बेटी के विवाह के लिए पिता की मौजूदगी आवश्यक है, क्योंकि समाज गैर– जिम्मेदार पिता को तो स्वीकार कर सकता है किंतु बिना पिता के बेटी का ब्याह उसे मंजूर नहीं है। मंडप में पिता की उपस्थिति अनिवार्य है। यह पुरुष प्रधान समाज की रीति है, परंपरा है, जिससे अनारो मुंह नहीं मोड़ सकती। इसलिए वह दिल्ली से मुंबई अपने बहनोई रामभरोसे के साथ उस नकारे, गैर–जिम्मेदार पति– पिता को लेने जाती है। ष्बस, दस रोज किसी तरह गुजारा कर लो,फिर आकर मैं सब सम्भाल लूँगी। अपने लिए तो सौ जन्म भी न जाती, पर बेटी के लिए बाप को खोजकर लाना ही पड़ेगा।" (पृष्ठ 55) [11]

वह हाथ जोड़े पति की हर इच्छा को पूरा करती है, क्योंकि उसे बेटी ब्याहनी है। इतना ही नहीं सगाई के बाद जब नंदलाल वापस अनारो से वाद–विवाद करके भाग जाता है तब समधियों के आगे अपनी इज्जत बनाए रखने के लिए और बेटी को दुल्हन बनाकर ससुराल भेजने का स्वप्न पूरा करने के लिए वह टीचर मालकिन से झूठी चिट्ठी लिखवाकर दूसरी बार पुनः नंदलाल को बुलाती है, क्योंकि उसकी मात्र मौजूदगी ही संबंध जोड़ सकती है, यही समाज की खोखली रीति है।

पुरुष प्रधान समाज के खोखले रिवाज का शिकार केवल अनारो जैसी गरीब, बेबस, अनपढ़ स्त्रियां ही नहीं है बल्कि शिक्षित, संपन्न घरों की स्त्रियां भी हैं। अनारो की मोटी बीवी जी के मुंह पर ताला लगा है क्योंकि उनके पैरों में मर्यादा की बेड़ियां हैं। वह अपने आवारा पति को पर–स्त्री के चंगुल से छुड़ाने में बेबस है। वह अनारो की तरह आर्थिक रूप से लाचार नहीं है, किंतु सब कुछ हो कर भी कुछ नहीं है उसके पास।

"भला बताओ, जो दुःख अनारो के, वही क्लेश इत्ती बड़ी सेठानी के। बस, औरत जात यहीं मार खा जाती है। पैसा भी किस काम का।" (पृष्ठ 26)[12]

अनारो और मोटी बीबी जी, दोनों पुरुष के अत्याचार से पीड़ित हैं। मोटी बीवी जी के पति का भी वही हाल है जो अनारो के नंदलाल का है,पर अनारो अपने समाज में चीख–चिल्लाकर अपने पति के कुकर्मों का, अमर्यादा का विरोध कर सकती है, लेकिन इज्जत व शर्म तथा संस्कार की बेडियो में, मर्यादा के पर्दे में, मोटी बीवी जैसी संपन्न घराने की स्त्रियां अनारो की तरह विरोध करने का साहस भी नहीं कर सकती हैं। मोटी बीबी जी घुट–घुटकर चारदीवारी में बेबसी के आंसू बहाने के सिवाय और कुछ नहीं कर सकती इसीलिए मोटी बीबी जी अनारो पर मेहरबान हैं ।

"इससे तो अनारो भली। आदमी भागा भी तो दोनों को ही तज के। सौत के पास जाके रह तो नहीं गया [1] मोटी बेचारी तो रोये–पीटेगी भी तो दरवाज़ा बंद करके। इज्जत के मारे मरी जायेगी।" (पृष्ठ 26)[13]

"अनारो" उपन्यास में लेखिका ने एक ओर यदि अनारो, मोटी बीवी जी, टीचर जैसी स्त्रियों के रूप को दिखाया है जो पुरुष द्वारा सताई गई हैं, किंतु अपने बल पर अकेले सम्मान पूर्वक जीने का प्रयास कर रही हैं, वहीं दूसरी ओर छबीली जैसी नारी का रूप भी है जो स्वार्थ– अंधत्व में स्वयं नारी होकर नारी का सुख छीन लेना चाहती है। छबीली जानती है नंदलाल घर–परिवार वाला है, फिर भी उसकी जिंदगी में आती है, इतना ही नहीं अनारो द्वारा घर से निकाले जाने पर और नंदलाल के घर छोड़कर चले जाने पर, छबीली दूसरे पुरुष चेचकरु से अपना संबंध बनाती है, और जब नंदलाल वापस आता है तब वह चेचकरु के घर में ही रहकर नंदलाल से भी संबंध बनाए रखती है। वास्तव में छबीली जैसी नारियाँ ही पुरुष की विलासिता की अग्नि में भी डालती हैं और नारी के मान–सम्मान को पैरों तले रौंद डालती हैं। वह ना तो कभी किसी की आदर्श पत्नी ही बन पाती हैं और ना ही ममतामयी मां, तभी तो अनारो छबीली के बेटे, जो नंदलाल का खून है, उसे अपने पास बुलाना चाहती है क्योंकि अनारो को मंजूर नहीं कि उसके पति का खून चरित्रहीन हो। वह उसे अच्छे संस्कारों में पालना चाहती,क्योंकि वह समाज को दूसरा नंदलाल नहीं देना चाहती है।

ष्जब वह तेरा है तो पराए घर की कमाई क्यों खाएगा। ले आए उसे यहीं खिला पिलाकर बड़ा कर लेंगे कमाके हमीं को खिलाएंगे फिर दो दो बेटोवालों को काहे की कमी रह जाएगी।[14]"

इस प्रकार "अनारो" उपन्यास नारी–जीवन से जुड़ा है जो नारी को सदैव शारीरिक व मानसिक रूप से पुरुष समाज के शोषण

का शिकार होती चली आ रही है किंतु जब अत्याचार हद से बढ़ जाता है तब चीख भी निकलती है जो हर दीवार को भेद देती है। अनारो इसी दीवार को तोड़ देना चाहती है, जिसके तले नारी घुट–घुट कर दम तोड़ देती है। अंत में वह ऐसा करके दिखा भी देती है कि वह दिन दूर नहीं जब पुरुष समाज नारी– शक्ति का, उसके अस्तित्व का लोहा मान लेगा। उपन्यास के अंत में नंदलाल जैसा पुरुष भी स्वीकारता है कि "यह मेरी पत्नी नहीं, भाई बरोबर है।"[15] उसने वह सब कुछ कर दिखाया जो पुरुष होकर भी नन्दलाल ना कर सका। पति के मुँह से ऐसे सम्मान भरे वचन सुनकर अनारो के अंदर की माननी प्रेमिल पत्नी गर्व से फूली नहीं समाती —" कर्ज़ा तो यों चुटकियों में उतर जायेगा, पर उसका मान, उसकी कदर बनी रहे, उसके मरद की नज़र में" ।[16]

इसके अतिरिक्त यह उपन्यास महानगरों में झुग्गी– झोपड़ी में रहनेवाले लोगों की जीवन कथा भी कहता है, जिन्हें जी–तोड़ मेहनत के बावजूद दो वक्त की रोटी भी बड़ी मुश्किल से नसीब होती है और शिक्षा, अज्ञानता के कारण शराब, तंबाकू जैसे व्यसन का शिकार होते हैं, खोखली सामाजिक मान्यताओं में जकड़े रहते हैं। अनारो द्वारा बेटी का मंदिर में ब्याह होने के बाद पुनः सामाजिक रीति से कर्जा लेकर विवाह कराना, टीचर मालकिन द्वारा संस्था के द्वारा विवाह की बात करने पर क्रुद्ध होना, इसका प्रमाण है।

"अनारो को पहली बार टीचर अच्छी नही लगी, बल्कि बुरी ही लगी–बहुत बुरी, जैसे गाली दे दी हो अनारो को। चंदे–दान पर अनारो की बेटी का ब्याह ? यही कराना होता तो दोनो बच्चों के हाथों में भीख का कटोरा थमाकर न निकाल देती ! यों अपनी हड्डियों का चूरा बनाकर न पालती उन्हें।" [17]

एक वक्त खाकर पैसे इकट्ठे करके संबंधियों के आगे पैसा लुटा कर झूठी शान के पीछे भागना, झोपड़ी में बसे लोगों की अज्ञानता को दर्शाता है। कर्ज और अभावग्रस्त जीवन जीना इनकी नियति है। शांति और मनहर द्वारा इन सब का विरोध दो पीढ़ियों के द्वंद और बदलती विचारधारा का प्रतीक है।

अनारो अशिक्षित है इसलिए असभ्य है और असभ्य भाषा का प्रयोग करती है। बात–बात में महाभारत मचा देना, गाली–गलौज करना, इनकी भाषा और दिनचर्या की पहचान है।

"अब जैसी तेज तर्रार कहाँ थी अनारो। वह सब तो उसने बाद में सीखा। मदनगीर के टोले की थी भी यही रीत। खाने को चाहे हो न हो, बीमारी चाहे सब खून चूस ले, पर लड़ते समय तो सबके तन में नये प्राण भर जाते। जिसने भी ईंट का जवाब पत्थर से न दिया, वही सबसे बड़ा मूर्ख। लड़े न तो जी कैसे लगे? (पृष्ठ 91) [18]

निष्कर्ष

इस प्रकार यह उपन्यास आधुनिक नारी की अस्मिता की पहचान अनारो के माध्यम से कराता है और यह दर्शाता है कि आज की आधुनिक नारी यदि चाहे तो अपने पैरों पर खड़े होकर अर्थात आत्मनिर्भर बनकर अपने परिवार का भरण–पोषण ही नहीं अपितु सम्मान के साथ समाज में परिवार में जीवनयापन कर सकती है,साथ ही यह उपन्यास महानगरी झोपड़ियों में सांस लेते जीवन का लेखा–जोखा भी प्रस्तुत करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. अनारो, मंजुल भगत
2. https:@@www-pustak-org
3. https:@@vastavpatra-wordpress-com
4. समकालीन हिन्दी उपन्यास दृ डॉ. जालिंधर इंगले
5. हिन्दी के समकालीन महिला उपन्यासकार दृ डॉ. एम. वेंकटेश्वर